मॉड्यूल – विद्यालय में खेल वातावरण

भाग – 1	भाग – 2	भाग – 3
विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझें	अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर	खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने में

शीर्षक :
आओ करें विद्यालय में खेल वातावरण का निर्माण

मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में

उद्देश्य :

इस मॉड्यूल को पूर्ण करने के पश्चात् प्रधानाध्यापक

1. विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझ सकेंगे।
2. अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझ सकेंगे।
3. अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने में सक्षम हो सकेंगे।

कीवर्डस

एन.सी.एफ. 2005, मध्यप्रदेश खेल नीति 2005, के.जी.बी.व्ही.(कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय), एन.ई.पी.2020, फिट इंडिया, एस.फॉर.डी. (स्पोर्ट फॉर डलबपमेंट), निपुण भारत, लाईफ स्किल, शाला सिद्धि, एन.सी.ई.आर.टी. के परफोरमेंस इडिकेटर 2013, स्वच्छ भारत अभियान 2014, पढ़ो इंडिया बढ़ो इंडिया आदि।

परिचय

खेल जीवन का एक आवश्यक अंग है। प्राचीन काल से ही मनुष्य खेलों से जुड़ा है। भारत में पुराने समय से कई खेल खेलते आ रहे हैं, जिनमें मुख्य खेल धनुष बाण, तलवार चलाना, भाला चलाना इत्यादि हैं। समाज में विभिन्न प्रकार के खिलाड़ी विद्यालय से ही आते हैं। विद्यालयों के खेलों से विभिन्न आयामों का विकास होता है। खेल व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का महत्त्वपूर्ण घटक है। अतः इस आयाम का विद्यालयों में उपस्थित होना अति आवश्यक है। लेकिन यह तभी संभव है जब विद्यालयों में खेलों का वातावरण मौजूद हो। वातावरण एवं खेलों का एक-दूसरे से गहन संबंध हैं। खेल वातावरण का अर्थ है कि खेल खेलने के लिए आसपास का वातावरण रोचक एवं आनंददायी होना चाहिए। ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसे खेल पसंद न हो।

रोचक बात यह है कि बच्चे खेल-खेल में जीवन के कई महत्त्वपूर्ण पड़ाव पार कर जाते है। जैसे कि बोलना, खड़े होना, दौड़ना, उठना, बैठना, चीजों को हाथ में पकड़ना, फेंकना इत्यादि। खेल से छात्रों का केवल शारीरिक विकास ही नहीं होता बल्कि खेलों से मानसिक, भावनात्मक, रचनात्मक, सृजनात्मक, ध्यान केंद्रित करना, निर्णय लेकर क्रियान्वयन करना, मिल जुलकर समूह में कार्य करना, दल नेतृत्व करना आदि कई स्वाभाविक गुणों का विकास भी होता है।

विद्यालय में शिक्षक ऐसे सरल, रोचक और मनोरंजक खेलों का क्रियान्वयन करते हैं जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। खेलों के माध्यम से कक्षाओं में स्वयं सीखने का वातावरण निर्माण होता है। इससे छात्रों के नामांकन एवं उपस्थिति की दर में बढ़ोतरी होती है। खेलों से बच्चों में भयमुक्त वातावरण आनंददायी शिक्षा, समूह में कार्य करना, एवं प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। शाला सिद्धि के आयाम क्रमांक1 विद्यालय में उपलब्ध संसाधन, उपलब्धता, पर्याप्तता और उपयोगिता के अंतर्गत मानक क्रमांक 2 खेल के मैदान, खेल सामग्री और उपकरण, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार खेल सामग्री, खेल मैदान एवं शारीरिक शिक्षा पर बल दिया गया।

इसी प्रकार एन.सी.एफ.2005 में भी खेल गतिविधियों को फोकस करते हुए शैक्षिक खेलों, शैक्षिक खेल सामग्री के प्रयोग पर बल दिया। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र के बाल अधिकार अधिनियम 1980 में भी बच्चे के खेलने के अधिकार और खेल सामग्री की उपलब्धता पर चर्चा की गई। इसी प्रकार यूनीसेफ का डिजाइन किया हुआ एस. फॉर. डी. मॉड्यूल (स्पोर्ट्स फॉर डेवलपमेंट) में भी खेल गतिविधियों का विद्यालयों में किस प्रकार क्रियान्वयन किया जाए एवं खेल से बालक-बालिकाओं में किस प्रकार नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। इसी के साथ यह कार्यक्रम बालिकाओं की विद्यालय में भी उपस्थिति बढ़ाने में एवं दिव्यांग बालक/बालिकाओं में समावेशी शिक्षा की ओर प्रेरित करता है। दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विद्यालय स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विद्यार्थी खेलों में भाग ले सके इस हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पैरालंपिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

खेलों से बच्चों की सक्रियता में वृद्धि, होती है। खेल बच्चों को उत्साही, सृजनशील और जिज्ञासु बनाता है। खेलों से बच्चों में अनुशासन का गुण भी प्राप्त होता है। खेलों से विद्यालयों में वातावरण निर्माण के लिए एन.सी.एफ. 2005, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खेल नीति इक्कीसवीं सदी के कौशलों में एवं निपुण भारत में लाइफ स्किल में, शाला सिद्धि में आदि नीतियों में भी खेलों को महत्व देने की बात की गई है।

भाग - 1 :
विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझें

विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझने में मॉड्यूल के इस हिस्से को पूर्ण करने के पश्चात प्रधानाध्यापक सक्षम होंगेः-

1. खेल गतिविधियों से संबंधित नीति निर्देशों को समझने में।

2. विद्यालय संबंधित खेल किस प्रकार से विद्यालय का महत्त्वपूर्ण अंग हैं, को समझने में।

सैद्धांतिक पक्ष

राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा 2005 में अनुशंसा की कि खेलों के माध्यम से सर्वांगीण गुणों का विकास होता है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 29 के अंतर्गत बच्चों का पूरी तरह शारीरिक एवं मानसिक योग्यताओं का विकास एवं धारा 19 के अंतर्गत खेल मैदान एवं प्रत्येक कक्षा के लिए खेल उपकरण प्रत्येक विद्यालय में उपलब्ध कराने की बात की गई है। इन्हीं बिन्दुओं की पूर्ति हेतु विद्यालयों में राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के द्वारा प्रति विद्यालय में खेल सामग्री चिन्हित कर उपलब्ध कराई गई है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी विकास और सीखने के संदर्भ में बिन्दु 2.3.1 में यह बात कही गई हैं। सभी बच्चों का स्वस्थ शारीरिक विकास सभी प्रकार के विकास की पहली शर्त है। इसके लिए मूलभूत आवश्यकताएं जैसे पौष्टिक आहार, शारीरिक व्यायाम तथा अन्य मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक जरूरतों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए सभी बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलों (औपचारिक एवं अनौपचारिक) योग की गतिविधियों में सहभागिता कर अपना शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास कर सकें।

इन्ही सभी योजनाओं के अंतर्गत मध्यप्रदेश के समस्त प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध कराने हेतु पत्र एवं राशि जारी की गई है। जिससे मध्यप्रदेश की समस्त विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध हो गई हैं। प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय को 5000 एवं माध्यमिक विद्यालय हेतु 10000 की राशि राज्य शिक्षा केन्द्र की ओर से खेल सामग्री हेतु प्रदान की गई है।

विद्यालयों में खेलों से ही मेजर ध्यानचंद्र, श्री मिल्खा सिंह, श्रीमती पी.टी उषा, सचिन तेन्दुलकर, मैरिकॉम, नीरज चोपड़ा आदि राष्ट्रीय खिलाड़ियों का उदय प्रारंभिक विद्यालयों से ही होता है। मध्यप्रदेश के शासकीय एवं प्राइवेट विद्यालयों के विद्यार्थी स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के अंतर्गत खिलाए जाने वाले स्कूल गेम जो कि कक्षा 3 से 8 के छात्रों के लिए मिनी कैटेगरी में खिलाए जाते हैं (14 वर्ष से कम आयु वाले विद्यार्थियों को खिलाए जाते हैं) एवं 14 से 17 वर्ष के विद्यार्थियों को जूनियर कैटेगरी के अंतर्गत खिलाए जाते हैं। 17-19 वर्ष के विद्यार्थियों हेतु सीनियर कैटेगरी होती है इन खेलों में मध्यप्रदेश के कई खिलाड़ी अपने विद्यालयों से चयनित होकर संकुल

स्तर, ब्लॉक स्तर, जिला स्तर, संभाग स्तर, प्रदेश स्तर और राष्ट्रीय स्तर तक भाग लेते हैं- नेशनल में गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को रु.10000 की नगद प्रोत्साहन राशि, सिल्वर मेडल प्राप्त करने विद्यालय वाले विद्यार्थी को रु.7500 की नगद प्रोत्साहन राशि और ब्रोंज मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को रु.5000 की नगद प्रोत्साहन राशि मध्यप्रदेश शासन द्वारा दी जाती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उच्च शिक्षा संस्थानों में भी खिलाड़ियों को संस्थान में प्रवेश की मेरिट सूची में बोनस अंक दिए जाते हैं।

केस स्टडी

खेल गतिविधियां करते विद्यार्थी।

शिवपुरी जिले के शिवपुरी विकासखण्ड के अंतर्गत जिला मुख्यालय से 13 कि.मी. की दूरी पर तानपुर गाँव के प्राथमिक विद्यालय में 141 बच्चे दर्ज थे। इनमें से लगभग 58 बच्चे ही विद्यालय में पढ़ने आते थे। प्रधानाध्यापक राकेश भटनागर बच्चों की कम उपस्थिति को लेकर बड़े चिंतित थे। उन्होंने बच्चों की कम उपस्थिति की चिंता अपने गांव के सरपंच, शिक्षक, पालकों आदि से व्यक्त की। इसकी चिंता स्टाफ के साथियों, पालकों और एस.एम.सी के बीच रखी। इसी बीच जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता वर्धन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण हेतु श्री राकेश भटनागर ने सहभागिता की। प्रशिक्षण के दौरान उन्होने स्वंय के विद्यालय में आ रहे विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी चुनौती पर चर्चा की। प्रशिक्षण के दौरान छात्र उपस्थिति को लेकर विभिन्न खेल गतिविधियां करायी गई।

गतिविधियां करते हुए विद्यार्थी।

इन्हीं गतिविधियों को लेकर जब प्रशिक्षण उपरांत विद्यालय के प्रधानाध्यापक अपने विद्यालय पहुंचे तो उन्होंने प्रशिक्षण में सिखायी गई खेल गतिविधियां विद्यालय के शेष शिक्षकों एस.एम.सी., बाल केबिनेट एवं पालकों को सिखायी। इसके बाद उन्होंने खेल गतिविधियों को विद्यालय में छात्रों के बीच कराया। तब छात्र संख्या मात्र 60 थी।
छात्रों ने विद्यालय में सीखी हुई खेल गतिविधियों को विद्यालय अवकाश के बाद गाँव के चौपाल में, अपने आंगन में, खेल के मैदान में गतिविधियों को लेकर खेल खेलने लगे।

गतिविधियां करते हुए विद्यार्थी।

जो बच्चे विद्यालय में नहीं जाते थे उन्होंने उन गतिविधियों को देखा और खेलने के लिए बच्चों से बोला तो बच्चों ने उन्हें खेल में सम्मिलित किया। तो उन बच्चों को बड़ा आनन्द आया। उन्होंने उन छात्रों से पूछा कि तुमने यह खेल कहाँ सीखा। यह तो बड़ा अच्छा खेल है। तब स्कूल से आने वाले छात्रों ने कहा कि हमारे प्रधानाध्यापक जब से प्रशिक्षण से आये हैं तब से वो प्रतिदिन अलग-अलग खेल खिलाते है। उनकी बात सुनकर अनुपस्थित छात्रों ने विद्यालय जाने का निर्णय लिया।

सामूहिक खेल में भाग लेते विद्यार्थी।

अगले दिन से अनुपस्थित छात्र विद्यालय में जाने लगे। अब विद्यार्थी शिक्षक और प्रधानाध्यापक ने अपनी विद्यालय में नियमित रूप से अलग-अलग तरह के ऑउट डोर एवं इनडोर खेलों के साथ-साथ शैक्षिक खेलों को खिलाना प्रारंभ किया जिसमें कार्ड गेम, पत्ता पलट, संख्या खेल, प्रश्नों का पिटारा अंत्याक्षरी, आओ पुस्तक पढ़े, साँप सीढ़ी, अंक पट्टी, ए की होती दो टांगे, हिंगलिस गतिविधि, मैच बॉक्स गतिविधि, कौन बनेगा वर्ण विजेता, सितोलिया, खो-खो, कबड्डी, कुर्सी रेस, जलेबी रेस, नींबू रेस आदि खेल गतिविधियां कराई जिससे अनुपस्थित छात्रों में विद्यालय आने की रूचि जागृत हुई और बच्चे प्रतिदिन विद्यालय आने लगे। धीमे-धीमे छात्र संख्या 130 हो गई और खेल गतिविधियों के माध्यम से शैक्षिक खेल भी नियमित होने लगे और यह विद्यालय लगभग 50 आसपास के गाँवों में एक आदर्श विद्यालय बन गया।

सोचिए और लिखिए

1. तानपुर के प्रधानाध्यापक के द्वारा कौन-सा प्रशिक्षण प्राप्त किया?

.....

.....

.....

.....

2. प्रशिक्षण के बाद प्रधानाध्यापक ने क्या रणनीति बनाई?

.....

.....

.....

3. रणनीति का किस प्रकार विद्यालय में क्रियान्वयन किया गया?

.....

.....

.....

4. क्या आपके विद्यालय में भी छात्रों की उपस्थिति को लेकर कोई चुनौती है? आप उसका समाधान कैसे करते हो?

.....

.....

.....

5. आपके विद्यालय में कौन-कौन सी खेल गतिविधियाँ संचालित होती हैं विस्तार से लिखिए?

.....

.....

.....

6. क्या एनसीएफ 05 में खेल वातावरण की बात की गयी है? हाँ/नहीं

7. फिट इंडिया खेल भावना से संबंधित गतिविधियां कराता है? हाँ/नहीं

8. एस 4 डी(स्पोर्ट्स फॉर डेवलपमेंट) कक्षा 8 तक विद्यार्थियों के लिए है? हाँ/नहीं

सुमित अंतिल की सफलता की कहानी

सुमित अंतिल का जन्म 7 जून 1998 ईस्वी को हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले के खेवड़ा गाँव में हुआ था। सुमित अंतिल बचपन से ही पहलवान बनना चाहते थे और पहलवानी सीखने के लिए सुमित अंतिल सोनीपत के ही एक अखाड़े में पहलवानी की प्रैक्टिस करते थे। सुमित अंतिल भारतीय पहलवान योगेश्वर दत्त को अपनी प्रेरणा मानकर कुश्ती के क्षेत्र में कुछ बड़ा करना चाहते थे। किंतु एक दुर्घटना में उनका पैर क्षतिग्रस्त हो गया। इस तरह से सुमित अंतिल का पहलवान बनने का सपना टूट गया। हालांकि उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और खेल के क्षेत्र में ही अपना करियर बनाने का निर्णय लिया करीब 6 साल पहले सड़क हादसे में अपना एक पैर गंवाने वाले सुमित ने बुलंद हौसलो, मेहनत और जज्बे के दम पर यह मुकाम हासिल किया है। हरियाणा के रहने वाले सुमित तीन बहनों के इकलौते भाई हैं। सुमित जब 7 साल के थे तब एयरफोर्स में तैनात उनके पिता की बीमारी से मौत हो गई थी। साल 2015 में जब सुमित ट्यूशन लेकर अपने घर वापस आ रहे थे तभी एक ट्रैक्टर ट्रॉली ने टक्कर मार दी इसी हादसे में सुमित को अपना एक पैर गंवाना पड़ा था और वह कई महीनों तक बिस्तर पर रहे। उनका मनोबल उन्हें सफलता दिला पाया।

सुमित अंतिल ने वर्ल्ड रिकॉर्ड थ्रो के साथ जीता गोल्ड मैडल। Source:Tezztarrar.com

भाग - 2 :
अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझना

मॉड्यूल के इस हिस्से को पूर्ण करने के पश्चात प्रधानाध्यापक सक्षम होंगे -

1. अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझना में।
2. खेलों के प्रति शिक्षकों, छात्रों, एस.एम.सी. बाल केबिनेट, पालकों में खेल वातावरण के निर्माण की समझ विकसित करने में।

सैद्धांतिक पक्ष

खेल बच्चे की स्वाभाविक क्रिया है । भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से बच्चों के शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक , संवेगात्मक विकास सामाजिक विकास एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है, किन्तु अभिभावकों की खेल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति एवं कार्यकलाप ने बुरी तरह प्रभावित किया है।

अतः यह अनिवार्य है कि शिक्षक और माता-पिता खेल के महत्व को समझें।

खेलों के प्रकारों में अन्वेषणात्मक खेल, संरचनात्मक खेल काल्पनिक खेल और नियमबद्ध खेल शामिल हैं। खेलों में सांस्कृतिक विभिन्नताएं भी देखी जाती हैं।

खेल से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा वह मनुष्य को सामाजिक कौशलों के विकास का भी अवसर देता है। खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। पहले चरण में बच्चा वस्तुओं के साथ संवेदन प्राप्त करने व कार्यसंचालन करने का प्रयास करता है। दूसरे चरण में बच्चा कल्पनाओं को रूप देने के लिए वस्तुओं को किसी के प्रतीक के रूप में उपयोग करने लगता है। अन्तिम चरण में 7 से 11 वर्ष काल्पनिक भूमिकाओं के खेलों की तुलना में बच्चा नियमबद्ध खेल; या क्रीड़ाओं अधिक संलग्न रहता है। खेलों से तार्किक क्षमता व स्कूल सम्बन्धी कौशलों को विकसित होने में मदद मिलती है।

केस स्टडी – ऐसा है मेरे सपनों का विद्यालय

मैं नव्या कक्षा-7 की एकीकृत शासकीय मा.वि., रूहानी की छात्रा हूँ। मेरे विद्यालय में प्रतिदिन सरस्वती वंदना, राष्ट्रीय गीत, मध्यप्रदेश गान होता है और देश भक्ति के नारे लगाये जाते हैं। स्वच्छता अभियान संदेश, योग क्रियाएं, समाचार पत्रों का वाचन बारी-बारी से छात्रों के द्वारा किया जाता है। विद्यार्थियों द्वारा दिवस में पड़ने वाले त्यौहार, पर्व एवं उस दिन की घटने वाली घटनाओं को बताया जाता है। बाल केबिनेट के शिक्षा मंत्री के द्वारा जिला, राज्य एवं देश के बारे में सामान्य

जानकारी बतायी जाती है। प्रार्थना सभा के उपरांत हम सभी विद्यार्थी पंक्तिबद्ध तरीके से अपनी-अपनी कक्षाओं में जाते हैं। सभी बेलाऐं क्रम से चलने के बाद षष्ट्म बेला का सभी छात्रों को बड़ा बेसब्री से इंतजार रहता है, क्योंकि प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता वर्धन प्रशिक्षण उपरांत विद्यालय के प्रधानाध्यापक महोदय ने समुदाय और पालक शिक्षक संघ के साथ खेल के महत्व पर कई दौर की चर्चा उपरांत विद्यार्थियों हेतु खेल गतिविधियों के कालखंड एवं उसके समय को सुनिश्चित किया जिसमें समुदाय ने अपनी सहमति एवं सहभागिता सुनिश्चित की।

मैदान में खेलते बच्चे।

यह कालखण्ड खेल का अर्थात क्रीड़ा का होता है। जिसमें हम बारी-बारी से खेल गतिविधियों का आनंद उठाते हैं जिससे हमारे विद्यालय का वातावरण आनंददायी हो जाता हैं। हमारे विद्यालय में सोमवार को खो-खो, मंगलवार को कबड्डी, बुधवार सितौलिया, गुरूवार को चिड़िया बल्ला और शुक्रवार क्रिकेट का खेल खिलाया जाता है।

पन्द्रह दिवस के उपरांत इन्हीं खेलों के साथ-साथ अंताक्षरी, एक मिनिट प्रतियोगिता, निबंध लेखन, वाद विवाद प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता एवं अन्य प्रतियोगिताएं भी करायी जाती हैं। शनिवार के दिन प्रार्थना सभा के बाद मध्यावकाश के पूर्व शैक्षिक गतिविधियों के बाद बाल-सभा एवं खेल सभा का विशेष आयोजन होता है। इस दिन साप्ताहिक प्रतियोगिताओं को जीतने वाले प्रतियोगी के बीच प्रतिस्पर्धा कराकर विजेताओं को विद्यालय एवं एस.एम.सी के द्वारा पुरस्कृत किया जाता है। खेल गतिविधियों एवं बाल सभा की संपूर्ण जवाबदारी बाल कैबिनेट के मंत्री एवं सदस्यों की होती है। यह समिति खेल मैदान की साफ-सफाई, खेल की सामग्री एवं खेल टीमों का चयन करती है। इन सभी की मॉनिटरिंग प्रधानाध्यापक एवं कक्षा शिक्षक करते हैं। हमारे विद्यालय में विशेष अवसर के दिन अंतर विद्यालयीन प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता है। इसलिए मैं तो कहती हूँ कि मेरा विद्यालय मेरे सपनों के विद्यालय जैसा है।

खो-खो खेलते बच्चे।

निवेदक

नव्या

गतिविधि

आमतौर पर हमारे विद्यार्थियों में खिलाए जाने वाले खेल एवं उनके प्रकार कुछ इस तरह या इनसे मिलते-जुलते स्थानीय स्वरूप में होते हैं।

1. मेरा विद्यालय और मेरा खेल – मेरे विद्यालय में विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियाँ करायी जाती है। जैसे पत्ता पलट, अंक चार्ट, सॉप सीढ़ी, लूडो, रेल का खेल, हवाई जहाज का खेल, जानवरों के अभिनय का खेल, केरम, शेर बकरी, लंगड़ी दौड़, चोर सिपाही, कुत्ता बिल्ली, उल्टी दौड़, कौन शेर कौन गीदड़ इत्यादि।

2. मुक्त खेल और संरचनात्मक खेल – मुक्त खेल एवं संरचनात्मक खेल बच्चें स्वतंत्र रूप से रहकर खेल खेलते हैं। बाहरी खेल तथा भीतरी खेल भी खेलते है। वैयक्तिक और सामूहिक खेल भी खेलते है। ओजस्वी और शांत खेल भी खेलते हैं। संवेदी, क्रियात्मक और प्रतीकात्मक आदि खेल भी खेलते हैं।

आप भी अपने विद्यालय में विद्यार्थियों को खेलने को कहें। इस हेतु उन्हें खेल के बारे में बताएं एवं उसके नियम समझाएं। पहले शिक्षक खेलें फिर विद्यार्थियों को खेलने के लिए आंमत्रित करें।

सोचिये और बताइए

1. खेल आत्म नियंत्रण के विकास में किस प्रकार सहायक है?

.....

.....

2. आंतरिक एवं बाह्य खेलों में अंतर बताओ?

.....

.....

3. आपके विद्यालय में खेले जाने वाले सामूहिक खेलों की सूची तैयार कीजिए?

.....

.....

4.क्या आपके विद्यालय में इस प्रकार की कोई गतिविधियां होती हैं? यदि होती हैं तो उनके नाम बताएं?

.....

.....

5.आपके द्वारा करायी गयी गतिविधि/खेल का अवलोकन करें और बताएं क्या सभी विद्यार्थियों ने खेल में सहभागिता की? और क्या सभी बच्चे खेलते समय आनंद का अनुभव करते हैं और नई चीजें सीखते हैं?

.....

.....

विद्यालय के बाहर खेलते हुए बच्चे।

फोटोग्राफ पर आधारित चर्चा के प्रश्न

1. दिए गये फोटो में कौन-सी खेल गतिविधि खिलायी गई है ?

.....

.....

.....

2. आप के विद्यालय में इस प्रकार के कौन-कौन से खेल खिलाये जाते हैं ?

.....

.....

.....

3. दिए गये फोटो में छात्र-छात्राओं की कुल संख्या कितनी है ?

.....

.....

.....

4. दिया गया खेल चित्र इंडोर या आउटडोर खेल चित्र है ?

.....

.....

.....

बचपन और खिलौना

मैं जब बच्चा था, छोटी-छोटी चीजों से अपने खिलौने बनाने और अपनी कल्पना के नए-नए खेल इजाद करने की मुझे पूरी आजादी थी। मेरी खुशी में साथियों का पूरा हिस्सा होता था बल्कि मेरे खेलों का पूरा मज़ा उनके साथ खेलने पर निर्भर करता था। एक दिन हमारे बचपन के इस स्वर्ग में वयस्कों की बाज़ार प्रधान दुनिया से एक प्रलोभन ने प्रवेश किया। एक अंग्रेज दुकान से खरीदा गया खिलौना हमारे एक साथी को दिया गया। वह कमाल का खिलौना था बड़ा और सजीव। हमारे साथी को उस खिलौने पर घमंड हो गया और उसका ध्यान अब नहीं लगता था। यह उस कीमती चीज को बहुत ध्यान से हमारी पहुँच से दूर रखता था। अपनी इस खास वस्तु पर इठलाता हुआ। वह अपने अन्य साथियों से खुद को श्रेष्ठ समझता था, क्योंकि उनके खिलौने सस्ते थे। मैं निश्चित तौर पर यह कह तो सकता हूँ कि अगर वह इतिहास की आधुनिक भाषा का प्रयोग कर सकता तो वह यही कहता कि उस हास्यास्पद रूप से श्रेष्ठ खिलौनों का स्वामी होने की हद तक हमसे अधिक सभ्य था।

अपनी उत्तेजना में वह एक चीज़ भूल गया कि वह तथ्य जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था- कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज खो गई जो उसके खिलौनों से कहीं श्रेष्ठ थी। एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चा उस खिलौने से महज उसका मन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा नहीं। ना ही उसके खेल में बच्चे का आनंद था। और ना ही उसके खेल की दुनिया में साथियों को खुला निमंत्रण।

रवींद्रनाथ टैगौर के निबंध सभ्यता और प्रगति से

(एन सी एफ 05 के पृष्ठ क्रमांक 20)

विचारणीय प्रश्न

1. खेल बच्चों के संपूर्ण विकास में किस प्रकार सहायक है?
2. 7 से 11 वर्ष के बच्चे किन क्रीड़ाओं में संलग्न रहते हैं?
3. दी गयी आत्मकथा किस महापुरुष की है?

भाग - 3 :
अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता

4.3.1 अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने में मॉड्यूल के इस हिस्से को पूर्ण करने के पश्चात् प्रधानाध्यापक सक्षम होंगे।

4.3.2 विद्यालयों में खेलों के लिए आवश्यक संसाधन (खेल मैदान, खेल सामग्री) उपलब्धता सुनिश्चित करने में।

विद्यार्थियों के साथ खेल गतिविधि करते शिक्षक एवं खिलौनों के साथ गतिविधि करते विद्यार्थी।

केस स्टडी (विद्यालयों में खेलों को प्रोत्साहित करना)

श्री नीरज मिश्रा एकीकृत शा.मा.वि.रामनगर में शिक्षक हैं। वह अपने विद्यालय में बच्चों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित कर बाल कैबिनेट, एस.एम.सी., पालक शिक्षक संघ, राजस्व विभाग के सहयोग से निर्माण करते हैं। रामनगर विद्यालय में विद्यालय भवन के आगे लगभग 8 बीघा जमीन है जिस पर गाँव के कुछ दबंगों ने कब्जा कर लिया था। इस कारण वहां गाँव के लोग अपने-अपने घरों का कूड़ा फेंकते थे। इस विद्यालय के खेल का मैदान कूड़ा घर बन गया और विद्यालय के छात्र खेलने में असहज महसूस कर रहे थे। बच्चों की इस समस्या से प्रधानाध्यापक चिंतित हुए। संस्था प्रमुख ने विद्यालय के खेल के मैदान पर हुए अतिक्रमण की बात गाँव के लोगों से की और कचरा घर की गंदगी के कारण विद्यालय के विद्यार्थी विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं, इस बात से अवगत कराया। जब गाँव वाले नहीं माने तो संस्था प्रमुख ने बच्चों से कहा कि वह अपने पालकों को समझाए कि अपने घरों का कूड़ा विद्यालय में ना फेंका करें। इस समस्या को लेकर विद्यालय में आयोजित होने वाली ग्राम सभा की बैठक में चर्चा की गई एवं उक्त समस्या के निराकरण हेतु आवेदन दिया। संस्था के प्रधानाध्यापक द्वारा ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, सी.ए.सी., बी.ए.सी., बी.आर.सी.सी., डी.पी.सी., राजस्व विभाग एवं जन प्रतिनिधियों को अवगत कराया गया। सभी के सहयोग से दबंग कब्जादारी का अतिक्रमण हटाकर कब्जे से मुक्त कराने हेतु कई आवेदन दिये। एक दिन उक्त ग्राम के विद्यालय में स्थानीय क्षेत्रीय विधायक महोदय का दौरा हुआ। जिसमें संस्था प्रमुख ने अपनी संस्था में बने कूड़ा घर को खत्म कराने हेतु बच्चों के साथ आवेदन दिया एवं विद्यालय से अतिक्रमण हटाने की बात कही। बच्चों की शिकायत पर क्षेत्रीय विधायक महोदय द्वारा स्थानीय सरपंच महोदय एवं ग्राम पंचायत को 10 दिवस में कब्जा मुक्त करने के निर्देश दिए गए। उक्त निर्देशों के क्रम में ग्राम पंचायत और सरपंच महोदय ने स्थानीय मजदूरों से ट्रैक्टर अन्य मशीनों की सहायता से अतिक्रमण को हटावाया। फिर ग्राम पंचायत के सहयोग से बॉऊंड्री वॉल के साथ मुख्य द्वार का निर्माण कराकर खेल का मैदान विकसित किया गया।

खेल का मैदान निर्माण होने के बाद छात्रों, शिक्षकों, बाल केबिनेट एवं समुदाय के युवकों में खेल के प्रति रुचि जागृत हो गई। शिक्षक ने विद्यालय के क्रीड़ा फण्ड के माध्यम से प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए खेल सामग्री क्रय की। जो राशि राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल के द्वारा जारी की गयी थी। प्रधानाध्यापक द्वारा छात्रों को विभिन्न खेलों में पारंगत बनाने के लिए माधवराव सिंधिया खेल अकादमी के नियंत्रक महोदय एवं तात्याटोपे शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षक महोदय एवं स्थानीय स्तर पर छोटे खाँ क्रिकेट अकादमी के संचालक (राज्य स्तरीय क्रिकेट खिलाड़ी) को भी विद्यालय में खेलों के महत्व को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर आमंत्रित कर छात्रों में खेल कौशलों को बढ़ावा दिया जाने लगा। जिससे विद्यालय में खेल प्रतिस्पर्धा की भावना बड़ने लगी। संस्था के जागरूक विधार्थियों एवं संस्था प्रमुख की सक्रियता से 8 बीघा खेल मैदान विकसित हो गया।

मध्यप्रदेश के संपूर्ण जिलों के साथ-साथ हमारे जिले में भी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा विद्यालय भवन को संसाधन के रूप में विकसिक कर विभिन्न प्रकार के शैक्षिक, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, खेल-खेल में सिखाने की विभिन्न गतिविधियों को विकसित किया और इस प्रकार पूरा विद्यालय खेल वातावरण से भरपूर हो गया। बाला की कुछ खेल गतिविधियाँ इस प्रकार हैं, जो विद्यालय में करायी जाती हैं।

शासकीय माध्यमिक विद्यालय रामनगर - YouTube

https://youtu.be/K1yrrEuyKlc

https://youtu.be/3Tmj48C92RA

गतिविधि –बाला (बिल्डिंग एज लर्निंग एड) विद्यालय एक खेल संसाधन के रूप में

मध्य प्रदेश के संपूर्ण जिलों के साथ-साथ हमारे जिले में भी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा विद्यालय भवन को संसाधन के रूप में विकसित कर विभिन्न प्रकार के शैक्षिक मनोरंजक ज्ञानवर्धक खेल- खेल में सीखने की विभिन्न गतिविधियों को विकसित किया और इस प्रकार पूरा विद्यालय खेल वातावरण से भरपूर हो गया।

बाला की कुछ खेल गतिविधियां इस प्रकार हैं जो विद्यालय में कराई जाती हैं -

1. फर्श पर गतिविधियों की विभिन्न प्रकार की आकृतियां पक्के पेंट से स्थाई बनाई गई हैं।
2. कक्षा कक्ष, बरामदा, आंगन, दीवार, छत, दरवाजे, खिड़की पर स्थाई आकृतियां बनाकर शैक्षिक खेल खिलाए जाते हैं।
3. खेल मैदान में मड माउंट, टायर के झूले, माप स्केल धूप घड़ी झूले कुश्ती के लिए मैदान, खो-खो, हाई जम्प लॉन्ग जम के मैदान इस प्रकार पूरे विद्यालय को बाला गतिविधि के अंतर्गत खेलमय गतिविधियों से भर दिया गया है।

चितंन मनन के प्रश्न –

1. विद्यालय के प्रधानाध्यापक के नाते आप अपने विद्यालय में खेल गतिविधियों को लागू करने हेतु कौन-कौन से संसाधन जुटाएँगे?
2. बाला से आपका क्या अभिप्राय है?
3. बाला के अंतर्गत कौन-कौन सी शैक्षिक गतिविधियाँ करायी जाती हैं?
4. बाला के अंतर्गत आपके विद्यालय में कौन-कौन सी शैक्षिक गतिविधि करवायी गई? विस्तार से लिखिए?

समेकन

अंत में हम कहेगें कि खेलों के प्रति शिक्षकों, छात्रों, एस.एम.सी., बाल केबिनेट आदि में रुचि जागृत कर खेलों को बढ़ावा देने के लिए वातावरण का निर्माण कर आवश्यक खेल संसाधन जुटाएँगे। खेलों से ही विद्यालय के वातावरण का निर्माण होता है। साथ ही खेलों के लिए वातावरण का निर्माण करना एक-दूसरे के पूरक है। खेलों के लिए शिक्षकों, छात्रों, समुदाय, एस.एम.सी., बाल कैबिनेट आदि में रूचि पैदा कर वातावरण का निर्माण कर आवश्यक संसाधन जुटाने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति एवं शासन की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत संसाधनों को जुटाना पहली प्राथमिकता में होना चाहिए। खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रति विद्यालय खेल शिक्षक का होना आवश्यक है। अतः इस मॉड्यूल के द्वारा विद्यालय प्रमुखों (स्कूल लीडर या संस्था प्रमुख) के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर विद्यालय के शेष घटकों जैसे शिक्षक, छात्रों, समुदाय, एस.एम.सी., बाल कैबिनेट, पालकों आदि का उन्मुखीकरण कर खेलों के प्रति जोड़कर खेल प्रतिभाओं को निखार कर खेलों में सक्रियता के साथ सहभागिता कर छात्रों का शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, एवं सर्वांगीण विकास करना महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. एन.सी.एफ. 2005 (पृष्ठ क्रमांक 20, 54 और 55),
2. के.जी.बी.व्ही.,
3. एन.ई.पी. 2020 (4.2 में खेल एक खोज गतिविधि आधारित शिक्षण को महत्व दिया गया है और शारीरिक शिक्षा को महत्व दिया गया है),
4. फिट इंडिया,
5. एस.फॉर.डी. (स्पोर्ट फॉर डेवलपमेंट),
6. निपुण भारत,
7. लाईफ स्किल,
8. शाला सिद्धि,
9. एन.सी.ई.आर.टी.के परफॉरमेन्स इंडिकेटर 2013,
10. स्वच्छ भारत अभियान 2014,
11. बाला, मध्य प्रदेश खेल नीति 2001,
12. नेट से सुमित अंतिल की स्टोरी 09/09/2021,
13. निष्ठा मॉड्यूल आदि।

आओ प्रयास करे

1. यदि आप अपने विद्यालय में खेल वातावरण का निर्माण करना चाहते है तो आप की योजना क्या होगी?

.....

.....

.....

2. सर्वप्रथम आप योजना के किस हिस्से पर कार्य प्रारंभ करेगे?

.....

.....

.....

.....

3. विद्यालय में खेल वातवरण के निर्माण करने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों में किस प्रकार का सांमाजस्य होना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

4. खेल के दौरान शिक्षक की भूमिका क्या होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

लेखक का नाम
मनीष जैन
डाईट शिवपुरी, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
ताज फराज खान
माध्यमिक शिक्षक
शासकीय माध्यमिक शाला, शहीद नगर, भोपाल
संकुल केन्द्र, शासकीय कन्या उमावि,
हमीदिया क्र. 2, फूल महल, भोपाल
मोबाइल- +91 99936 11091
ई मेल- tajfarazkhan@yahoo.in

❑ ❑ ❑